ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों में अध्ययनरत बी0एड0 विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती रेखा राणा

रीडर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलिज मेरठ

Abstract

प्रस्तुत शोध अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों में पढ़ने वाले बी0एड0 विद्यार्थियों के मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य से किया गया है। न्यादर्श के रूप में मेरठ जिले के दो कॉलेजों के 100 (50+50) विद्यार्थियों को चुना गया। आँकड़ों के संग्रह हेतू ओझा निर्मित मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण का कार्य मध्यमान, मानक–विचलन एवं टी–परीक्षण द्वारा किया गया। अनुदानित संस्थान के विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्य एवं स्ववित्त पोषित संस्थान के धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये।

मुख्य शब्द : अनुदानित, स्ववित्त पोषित, मूल्य

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक एवं सामंजस्यपूर्ण विकास में सहायक होती है, उसकी वैयाक्तिकता को विकसित करते हुये, उसे अपने वातावरण से समायोजन करने की क्षमता प्रदान करती है, जीवन में कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन के लिये तैयार करती है और राष्ट्र, समाज व विश्व के कल्याण हेतू आवश्यक दृष्टिकोण का निर्माण करती है।

''अब यह बात अधिकाधिक स्वीकार की जाने लगी है कि शिक्षा के प्रति सन्तुलित दृष्टिकोण का विकास किया जाना चाहिये। मानसिक प्रशिक्षण के साथ–साथ, कल्पनाशक्ति और मनोभावों को निर्मल बनाया जाना चाहिये। जिज्ञासु मस्तिष्क, अर्न्तज्ञानी हृदय, चेतनशील आत्मा और छानबीन करने वाले विवेक का विकास किया जाना चाहिये। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में हमें यह याद रखना चाहिये कि जीवन का वृक्ष, लोहे के ढाँचे से बिल्कुल भिन्न है। यदि हम विज्ञान और प्रौद्योगिक का प्रयोग करके निर्धनता को दूर करना चाहते है, तो ललित कलाओं द्वारा मस्तिष्क की हीनता को भी दूर किया जाना चाहिये। केवल भौतिक दरिद्रता ही दुःख का कारण नहीं है। हमें समाज के शक्तिशाली हितों को ही नहीं, वरन् मानव–हितों को भी सन्तुष्ट करना चाहिये। सौन्दर्यात्मक और आध्यात्मिक उत्कर्ष – पूर्ण मानव के निर्माण में योग देता है। मानव के निर्माणकारी पहलू का विकास, कला द्वारा होता है।'' राधाकृष्णन

मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं एवं लक्ष्य है जिनका अन्तरीकरण सीखने या सामाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है भारत में पाश्चात्य देशों की अपेक्षा मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। मानव जीवन में मूल्यों का समावेश जीवन को पूर्णता एवं स्थायित्व प्रदान करता है। सामान्यतः यह कहा जाता है कि मूल्य सिखाये नहीं जा सकते वरन् उन्हें अश्यान्तरीकृत किया जाता है। मूल्य वस्तुतः आचरण होते हैं। मूल्यों को आचार–विचार में ढ़ालने की प्रक्रिया परिवार के सदस्यों, विद्यालयी परम्परा से होती हुई समाज में सम्पन्न होती है।

राधाकमल मुकर्जी के अनुसार – मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते है जिन्हें अनुबन्धन अधिगम या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो व्यक्तिगत मानकों तथा आवश्यकताओं के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

शिक्षा की संरचना लोगों के जीवन, आवश्यकता एवं आकाँक्षाओं के अनुरूप की जानी आवश्यक है। पुरातन काल में शिक्षा का उद्देश्य साक्षरता एवं ज्ञान की प्राप्ति था किन्तु वर्तमान में शिक्षा को व्यावसायिक प्रगति का प्रमुख साधन माना जाने लगा है।

अध्यापक शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे मात्र किसी कौशल या कार्य के निष्पादन तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति में नीहित आन्तरिक क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय दृष्टि या सन्दर्भ में उपयोगी तथा संसाधन सम्पन्न व्यक्तित्व के लिये प्रयत्न किया जाता है।

भारतीय संस्कृति में गुरू की महिमा का गुणगान सर्वत्र सुनाई देता है। इसका कारण यह है कि किसी भी सश्यं एवं उन्नत समाज की प्रगति का भार शिक्षक के कन्धों पर ही है। मूल्य परक शिक्षा देने के लिये शिक्षक को स्वंय में मूल्यों का होना आवश्यक है। राधाकृष्णन आयोग (1949) के अनुसार शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य वैज्ञानिक और विद्वतापूर्ण प्रयासों से सत्य की खोज एवं जीवन मूल्यों की रक्षा करना है।

शोध के उद्देश्य –

1. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्यों की तुलना करना।
2. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों की तुलना करना।
3. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना करना।
4. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों की तुलना करना।

5. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों की तुलना करना।
6. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें –

1. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. अनुदानित एवं स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	45.68	4.92	3.12*
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	42.68	5.12	

तालिका – 2

अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	41.34	6.59	1.080
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	39.80	7.57	

तालिका – 3
अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	27.94	6.60	1.515
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	30.28	8.64	

तालिका – 4
अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	45.22	4.88	1.1275
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	45.10	4.52	

तालिका – 5
अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	42.64	4.60	1.1075*
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	44.04	5.13	

तालिका – 6
अनुदानित तथा स्ववित्त पोषित संस्थानों के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों की तुलना

क्र0 सं0	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान
1.	अनुदानित वि0 के छात्र	50	36.04	7.34	3.47*
2.	स्ववित्त पोषित वि0 के छात्र	50	41.16	7.32	

शोघ परिणाम –

- ❖ अनुदानित संस्थानों के बी0एड0 विद्यार्थियों के सैद्वान्तिक मूल्य स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाये गये।

- ❖ स्ववित्त पोषित संस्थानों के बी0 एड0 विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य अनुदानित संस्थान के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाये गये।
- ❖ अनुदानित संस्थान एवं स्ववित्त पोषित संस्थान के बी0 एड0 विद्यार्थियों के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गुड, सी.वी. डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन

कोटा खुला विश्वविद्यालय : उभरते भारतीय समाज में अध्यापन एवं शिक्षा

मुकर्जी राधाकमल, सामाजिक विचारक, विवेक प्रकाशन दिल्ली

राधाकृष्णन, ओकेजनल स्पीचीज एंड राइटिंग्स मिनिस्ट्री ऑफ इन्फॉरमेशन एंड ब्राडकास्टिंग न्यू देल्ही

शर्मा, आर. ए. : शिक्षा अनुसंधान, लॉयल बुक डिपो, मेरठ

शर्मा, आर. ए (2008) मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर लाल बुक डिपो, मेरठ